आरती संग्रह

Shri Ganesh Ji

श्री गणेश जी

Shri Ram Chander Ji

श्री राम चन्द्र जी

Shri Laxmi Ji

श्री लक्ष्मी जी

Shri Shiv Ji

श्री शिवजी

Shri Durga Mata

श्री दुर्गा माता

Shri Kali Mata

श्री काली माँ

Shri Hanuman Ji

श्री हनुमान जी

Laxmi Ganesh Saraswati

लक्ष्मी गणेश सरस्वती

Shri Bala Ji

श्री बाला जी

Sita Ram Laxman Ji

सीता राम लक्ष्मण जी

Shri Krishan Ji

श्री कृष्ण जी

Radha Krishan Ji

राधा कृष्णा

Shri Amba Ji

श्री अम्बा जी

Shri Gayatri Mata

श्री गायत्री माता

Shri Sai Baba

श्री साँई बाबा

आरती संग्रह

आरती संग्रह

सूची

गायत्री महामन्त्र

ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो
देवस्य धीमहि, धियो योनः प्रचोदयातः

शब्दअर्थ	ओ३म्	सर्व रक्षक परमात्मा
	भूः	प्राणों से प्यारा
	भुवः	दुख विनाशक
	स्वः	सुखस्वरूप है
	तत्	उस
	सवितुः	उत्पादक, प्रकाशक, प्रेरक
	देवस्य	देव के
	वरेण्य	वरने योग्य
	भुर्गः	शुद्ध विज्ञान स्वरूप का
	धीमहि	हम ध्यान करें
	यः	जो
	नः	हमारी
	धियो	बुद्धियों को
	प्रचोदयात	शुभ कार्यों में प्रेरित करें।

भावार्थ :- *उस प्राण स्वरूप; दुःखनाशक, सुख स्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देव स्वरूप परमात्मा को हम अन्तरात्मा में धारण करें। बह परमात्मा हमारी बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित करें।*

आरती क्या है और कैसे करनी चाहिये

आरती को 'आरात्रिका' अथवा 'आरार्तिक' और 'निराजन' भी कहते हैं। पूजा के अन्त में आरती की जाती है। पूजन में जो त्रुटि रह जाती है, आरती से उसकी पूर्ति होती है। स्कन्दपुराण में कहा गया है:-

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं यत् पूजनं हरेः।
सर्वं सम्पूर्णतामेति कृते नीराजने शिवे॥

पूजन मन्त्रहीन और क्रियाहीन होने पर भी नीराजन (आरती) कर लेने से उसमें सारी पूर्णता आ जाती है।

आरती में पहले मूलमन्त्र (भगवान् या जिस देवता का जिस मन्त्र से पूजन किया गया हो, उस मन्त्र) के द्वारा तीन बार पुष्पांजलि देनी चाहिये और ढोल, नगारे, शंख, घड़ियाल आदि महावाद्यों के तथा जय-जयकार के शब्द के साथ शुभ पात्र में घृत से या कपूर से विषय संख्या की अनेक बत्तियां जलाकर आरती करनी चाहिए।

ततश्च मूलमन्त्रेण दत्त्वा पुष्पांजलित्रयम्।
महानीराजनं कुर्यान्महावाद्यजयस्वनैः॥
प्रज्वालयेत् तदार्थं च कर्पूरेण घृतेन वा।
आरार्तिकं शुभे पात्रे विषमानेकवार्तिकम्॥

साधारणतः पाँच बत्तियों से आरती की जाती है, इसे 'पंचप्रदीप' भी कहते हैं। एक, सात या उससे भी अधिक बत्तियों से आरती की जाती है। कुंकुम, अगर, कपूर, चन्दन, रुई और घी, धूप की एक, पाँच या सात बत्तियाँ बनाकर शंख, घण्टा आदि बाजे बजाते हुए आरती करनी चाहिए।

आरती के पाँच अंग होते हैं। प्रथम दीपमाला के द्वारा, दूसरे जलयुक्त शंख से, तीसरे धुले हुए वस्त्र से, चौथे आम और पीपल आदि के पत्तों से और पाँचवें साष्टांग दण्डवत् से आरती करें। आरती उतारते समय सर्वप्रथम भगवान् की प्रतिमा के चरणों में उसे चार बार घुमायें, दो बार नाभिदेश में, एक बार मुखमण्डल पर और सात बार समस्त अंगों पर घुमायें।

यथार्थ में आरती पूजन के अन्त में इष्टदेव की प्रसन्नता के हेतु की जाती है। इसमें इष्टदेव को दीपक दिखाने के साथ ही उनका स्तवन तथा गुणगान किया जाता है।

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं च प्रदीपितम्।
आरार्तिक्यमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव॥

आरती श्री गणेश जी की

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश देवा।
माता जाकी पार्वती, पिता महादेवा।।
लड्डुअन का भोग लगे, सन्त करें सेवा॥ जय०॥
एक दन्त दयावन्त, चार भुजा धारी।
मस्तक सिन्दूर सोहे, मूसे की सवारी॥ जय०॥
अन्धन को आँख देत, कोढ़िन को काया।
बाँझन को पुत्र देत, निर्धन को माया॥ जय०॥
पान चढ़ें, फूल चढ़े और चढ़ें मेवा॥ जय०॥
शूरश्याम शरण में आये सुफल कीजे सेवा॥ जय०॥

लक्ष्मी जी की आरती

ओ३म् जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशदिन सेवत, हर विष्णु धाता॥ ओ३म् ॥
उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग-माता।
सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता॥ ओ३म् ॥
दुर्गा रूप निरंजनि, सुख-सम्पत्ति-दाता।
जो कोई तुमको ध्यावत, ऋद्धि-सिद्धि धन पाता॥ ओ३म्॥
तुम पाताल-निवासिनि, तुम ही शुभ दाता।
कर्म-प्रभाव प्रकाशिनि, भवनिधि की त्राता॥ ओ३म् ॥
जिस घर में तुम रहती, तहँ सब सद्गुण आता।
सब सम्भव हो जाता, मन नहीं घबराता॥ ओ३म् ॥
तुम बिन यज्ञ न होते, बरत न हो पाता।
खान-पान का वैभव, सब तुमसे आता॥ ओ३म् ॥
शुभ-गुण-मन्दिर सुन्दर, क्षीरोदधि-जाता।
रतन चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता॥ ओ३म् ॥
महालक्ष्मीजी की आरती, जो कोई जन गाता।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता॥ ओ३म् ॥

सरस्वती जी की आरती

आरती कीजे सरस्वती जी की,

जननि विद्या बुद्धि भक्ति की। टेक।

जाकी कृपा कुमति मिट जाए,

सुमिरन करत सुमति गति आये,

शुक सनकादिक जासु गुण गाये,

वाणि रूप अनादि शक्ति की॥ आरती कीजे०॥

नाम जपत भ्रम छुट दिये के,

दिव्य दृष्टि शिशु उधर हिय के।

मिलहि दर्श पावन सिय पिय के,

उड़ाई सुरभि युग-युग कीर्ति की॥ आरती॥

रचित जासु बल वेद पुराणा,

जेते ग्रन्थ रचित जगनाना।

तालु छन्द स्वर मिश्रित गाना,

जो आधार कवि यति सति की॥ आरती॥

सरस्वती की वीणा वाणी कला जननि की॥

सत्यनारायण जी की आरती

जय श्री लक्ष्मी रमणा, जय श्री लक्ष्मी रमणा।

सत्यनारायण स्वामी, जन-पातक-हरणा॥ जय॥

रत्न जड़ित सिंहासन, अद्भुत छवि राजे।

नारद करत निराजन, घण्टा ध्वनि बाजे॥ जय॥

प्रकट भये कलिकारण, द्विज को दर्शन दियो।

बूढ़ो ब्राह्मण बनके, कंचन महल कियो॥ जय॥

दुर्बल भील कराल, जिन पर कृपा करी।

चन्द्रचुड़ एक राजा, तिनकी विपत्ति हरी॥ जय॥

वैश्य मनोरथ पाया, श्रद्धा तज दीन्हीं।

सो फल भोग्यो प्रभुजी, फिर अस्तुति कीन्हीं॥ जय॥

भाव-भक्ति के कारण, छिन-छिन रूप धरयो।

श्रद्धा धारण कीनी, तिनको काज सरयो॥ जय॥

ग्वाल-बाल संग राजा, बन में भक्ति करी।

मनवांछित फल दीन्हों, दीनदयालु हरी॥ जय॥

चढ़त प्रसाद सवायो, कदली फल मेवा।

धूप दीप तुलसी से, राजी सत्यदेवा॥ जय॥

श्री सत्यानारायण जी की, आरती जो कोई नर गावे।

भगतदास मनवांछित सुखसंपति पावे॥ जय॥

ओरम् जय जगदीश हरे

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे,
भक्त जनन के संकट, छिन में दूर करे॥ ॐ॥
जो ध्यावे फल पावे, दुःख बिनसे मन का,
सुख-सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का॥ ॐ॥
मात पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी,
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी॥ ॐ॥
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी,
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी॥ ॐ॥
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता,
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता॥ ॐ॥
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति,
किस विधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमति॥ ॐ॥
दीन बन्धु दुःख हरता, तुम रक्षक मेरे,
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे॥ ॐ॥
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा,
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा॥ ॐ॥
तन, मन, धन सब कुछ है तेरा,
तेरा तुझको अर्पित, क्या लागे मेरा॥ ॐ॥

आरती श्री शिवजी की

जय शिव ओंकारा हर शिव ओंकारा,

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धांगी धारा । टेक।

एकानन चतुरानन पंचानन साजे,

हंसासन गरुड़ासन वृषवाहन साजे । जय।

दो भुज चार चतुर्भुज दश भुज ते सोहे,

तीनों रूप निरखता त्रिभुवन जन मोहे । जय।

अक्षमाला बनमाला रूण्डमाला धारी,

चंदन मृगमद लोचन भाले शशिधारी । जय।

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे,

सनकादिक ब्रह्मादि भूतादिक संगे । जय।

कर मध्ये कमण्डलू चक्र त्रिशूल धर्ता,

जगकरता जगहरता जगपालन करता । जय।

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका,

प्रणवाक्षर के मध्ये यह तीनो एका । जय।

त्रिगुण शिव की आरती जो कोई नर गावे,

कहत शिवानन्द स्वामी मनवांछित फल पावे । जय

शिवरात्रि की आरती

आ गई महाशिवरात्रि पधारो शंकर जी,

हो पधारो शंकर जी आरती ऊतारें पार।

उतारो शंकर जी हो उतारो शंकर जी,

तुम नयन २ में हो मन मन मे धाम तेरा।

हे नीलकण्ठ है कंठ कंठ में नाम तेरा,

हो देवों के देव जगत के प्यारे शंकर जी।

तुम राजमहल में तुम्हीं भिखारी के घर में,

धरती पर तेरा चरन मुकुट है अम्बर में।

संसार तुम्हारा एक हमारे शंकर जी,

तुम दुनिया बसा कर भस्म रमाने वाले हो।

पापी के भी रखवाले भोले भाले हो,

दुनियाँ में भी दो दिन तो गुजारो शंकर जी।

क्या भेंट चढ़ायें तन मैला घर सूना है,

ले लो आँसू के गंगाजल का नमूना है।

आ करके नयन में चरण पखारो शंकर जी।

शिव स्तुति

धन्य धन्य भोलानाथ बाँट दिए तीनो लोक पल भर में।
ऐसो दीन दयाल मेरे शम्भू भरो खजाना पलभर में॥

प्रथम वेद तो ब्रह्मा को दे दिया बने वेद के अधिकारी।
विष्णु को दिया चक्र सुदर्शन लक्ष्मी सी सुन्दर नारी॥

इन्द्र को दिया कामधेनु और ऐरावत सा बलकारी।
कुबेर को कर दिया आपने सारी सम्पत्ति का अधिकारी॥

अपने पास पात्र नहीं रखा, मग्न रहे बाघाम्बर में।
ऐसे दीनदयाल मेरे शम्भू, भरो खंजाना पल भर में॥

अमृत तो देवताओं को दे दिया, आप हलाहल पान किया।
ब्रह्म ज्ञान दे दिया उसी को, जिसने शिव तेरा ध्यान किया॥

भागीरथ को दे दी गंगा, सब जग ने स्नान किया।
बड़े बड़े पापियों को तारा, पलभर में कल्याण किया॥

आप नशे में मस्त रहो, पियो भंग निन खप्पर में।
ऐसे दीन दयाल मेरे शम्भु, भरो खजाना पल भर में॥

लंका तो रावण को दी, बीस भुजा दस शीश दिए।
रामचन्द्र को धनुष बाण, और हनुमत को जगदीश दिये॥

मनमोहन को दे दी मोहनी, और मुकुट बख्शीश दिए।
मुक्त हुए काशी के वासी, भक्ति में जगदीश दिए॥

वीणा तो नारद को दे दी, हरि भजन को राग दिया।
ब्राह्मण को कर्मकाण्ड, और सन्यासी को त्याग दिया॥

जिस पर तुमरी कृपा भई, उसी को अनगन राग दिया।
जिसने ध्याया उसी ने पाया महादेव तेरे वर में॥

आरती श्री रामचन्द्र जी की

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन, हरण भव भय दारुणम्।
नवकंज लोचन, कंज-मुख कर-कंज पद-कंजारुणम्॥
कंदर्प अगणित अमित छवि, नवनील-नीरद-सुन्दरम्।
पटपीत मानहु तड़ित रूचि सुचि नौमी जनक सुता-वरम्॥
भजु दीनबंधु दिनेश दानव - दैत्यवंश - निकंदनम्।
रघुनंद आनंदकंद कौशलचन्द्र दशरथ - नंदनम्॥
सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदार अंग विभूषणम्।
आजानुभुज शर-चाप-धर संग्राम - जित - खर - दूषणम्॥
इति वदति तुलसीदास शंकर-शेष-मुनि-मन-रंजनम्।
मम हृदय कंज निवास कुरु कामादि-खल-दल-गंजनम्॥

॥ भजन ॥

किये जा राम का सुमरन, अगर मुक्ति को पाना है।
अरे बाबा ! यह वह घर है, जो इक दिन छोड़ जाना है॥
लगा कर प्रीति विषयों से, जन्म वृथा गंवाता है।
मिला अनमोल यह हीरा, जो फिर ना हाथ आता है॥
महल ना साथ जावेंगे, ना जावें बाग बागीचे।
किसे न संग जाना है, यह मतलब का जमाना है॥
तोड़ संसार के बन्धन, लगा के प्रीति सिमरन में।
बिना भगवान के बन्दे, न तेरा कोई ठिकाना है॥

आरती श्री रामायण जी की

आरती श्री रामायण जी की।
कीरति कलित ललित सिय-पी की।।

गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद। बालमीक विज्ञान बिशारद।।
शुक सनकादि शेष अरु शारद। बरनि पवनसुत कीरति नीको।।
आरती।।

गावत वेद पुरान अष्टदस। छओं शास्त्र सब ग्रंथन को रस।।
मुनि-मन धन सन्तन को सरबस। सार अंश सम्मत सबही की।।
आरती।।

गावत सन्तत शम्भु भवानी। अरु घट सम्भव मुनि विग्यानी।
व्यास आदि कविबर्ज बखानी। कागभुषुण्डि गरूड़ के ही की।।
आरती।।

कलिमल हरनि विषय रस फीकी। सुभग सिंगार मुक्ति जुबती की।।
दलन रोग भव मूरी अमी की। तात मात सब विधि तुलसी की।।
आरती।।

आरती श्री अम्बा जी की

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।

तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवजी॥ जय अम्बे

मांग सिंदूर विराजत, टीको मृगमद को।

उज्जवल से दोउ नयना, चन्द्र वदन नीको॥ जय अम्बे

कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजे।

रक्त पुष्प गल माला, कण्ठन हार साजे॥ जय अम्बे

केहरि वाहन राजत, खड़ग खप्पर धारी।

सुर नर मुनि जन सेवत, तिनके दुख हारी॥ जय अम्बे

कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।

कोटिक चन्द्र दिवाकर, सम राजत ज्योती॥ जय अम्बे

शुम्भ-निशुम्भ विदारे, महिषासुर घाती।

धूम्र-विलोचन नयना, निशिदिन मदमाती॥ जय अम्बे

चण्ड-मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे।

मधु कैटभ दोउ मारे, सुर-भयहीन करे॥ जय अम्बे

ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमला रानी।

आगम-निगम बखानी, तुम शिव पटरानी॥ जय अम्बे

चौसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरों।

बाजत ताल मृदंग, और बाजत डमरु॥ जय अम्बे

तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता।

भक्तन की दुख हरता, सुख सम्पत्ति करता॥ जय अम्बे

भुजा चार अति शोभित, वर-मुद्रा धारी।

मनवांछित फल पावत, सेवत नर-नारी॥ जय अम्बे

कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती।

मालकेतु में राजत, कोटि रतन ज्योति॥ जय अम्बे

माँ अम्बे जी की आरती, जो कोई नर गावे।

कहत शिवानन्द स्वामी, सुख-सम्पत्ति पावे॥ जय अम्बे

आरती श्री दुर्गा जी की

अम्बे तू है जगदम्बे काली, जय दुर्गे खप्पर वाली,
तेरे ही गुण गावें भारती,
ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती।
तेरे भक्त जनों पर माता पीर पड़ी है भारी।
दानव दल पर टूट पड़ो मां करके सिंह सवारी॥
सौ सौ सिंहों से बलशाली, है अष्ट भुजाओं वाली,
दुष्टों को तू ही ललकारती। ओ मैया...
माँ-बेटे का है इस जग में बड़ा ही निर्मल नाता।
पूत-कपूत सुने हैं पर न माता सुनी कुमाता॥
सब पे करूणा दर्शाने वाली, अमृत बरसाने वाली,
दुखियों के दुखड़े निवारती। ओ मैया...
नहीं मांगत धन और दौलत, न चांदी न सोना।
हम तो मांगे तेरे चरणों में छोटा सा कोना॥
सबकी बिगड़ी बनाने वाली, लाज बचाने वाली,
सतियों के सत को संवारती। ओ मैया...
चरण शरण में खड़े तुम्हारी, ले पूजा की थाली।
वरद हस्त सर पर रख दो माँ संकट हरने वाली॥
माँ भर दो भक्ति रस प्याली, अष्ट भुजाओं वाली,
भक्तों के कारज तू ही सारती। ओ मैया...

वैष्णो देवी की आरती

सुन मेरी देवी पर्वतवासिनी कोई तेरा पार न पाया,

पान सुपारी ध्वजा नारियल ले तेरी भेंट चढ़ाया॥ सुन०॥

सुआ चोली तरे अंग विराजे केसर तिलक लगाया,

ब्रह्मा वेद पढ़े तेरे द्वारे शंकर ध्यान लगाया॥ सुन०॥

नंगे नंगे पग से तेरे सम्मुख अकबर आया,

सोने का छत्र चढ़ाया॥ सुन०॥

ऊँचे पर्वत बन्या शिवाली नीचे महल बनाया,

सतयुग द्वापर त्रेता मध्ये कलयुग राज बसाया॥ सुन०॥

धूप दीप नैवेद्य आरती मोहन भोग लगाया,

ध्यानु भक्त मैया तेरा गुन गावे,

मनवांछित फल पाया॥ सुन०॥

संतोषी माता की आरती

जय सन्तोषी माता जय सन्तोषी माता,

अपने सेवक जन की सुख सम्पत्ति दाता॥ जय॥

सुन्दर चीर सु ाहरी माँ धारण कीन्हों,

हीरा पन्ना दमके तन सिंगार लीन्हों॥ जय॥

गेरू लाल छटा छवि बदन कमल सोहे,

मन्द हंसत कल्याणी त्रिभुवन मन मोह॥ जय॥

स्वर्ण सिंहासन बैठी चँवर दुरें प्यारे,

धूप दीप मधु मेवा भोग धरे न्यारे॥ जय॥

गुड़ अरु चना परमप्रिय तामै संतोष कियौ,

सन्तोषी कहलाई भक्तन वैभव दियौ॥ जय॥

शुक्रवार प्रिय मानत आज दिवस सोही,

भक्तन मंडली छाई कथा सुनत जोहे॥ जय॥

मन्दिर जगमग ज्योति मंगल ध्वनि छाई,

विनय करें हम बालक चरनन सिर नाई॥ जय॥

भक्ति भाव मय पूजा अंगीकृत कीजै,

जो मन बसै हमारे इच्छा फल दीजै॥ जय॥

दुखी दरिद्री रोगी संकट मुक्त किये,

बहु धनधान्य भरे घर सुख सौभाग्य दिये॥ जय॥

ध्यान धरो जाने तेरो मनवांछित पायो,

पूजा कथा श्रवण कर घर आनन्द आयो॥ जय॥

शरण गये की लज्जा रखियो जगदम्बे,

संकट तू ही निवारे दयामयी अम्बे॥ जय॥

सन्तोषी माता की आरती जो कोई जनगावे,

ऋद्धि सिद्ध सुख सम्पत्ति जी भरके पावे॥ जय॥

॥ जय संतोषी माता॥

श्री दुर्गा नवरात्र व्रत कथा

॥ व्रत की विधि॥

इस व्रत में उपवास या फलाहार आदि का कोई विशेष नियम नहीं है। प्रातः उठकर स्नान करके, मन्दिर में जाकर या घर पर ही नवरात्रों में दुर्गा जी का ध्यान करके यह कथा पढ़नी चाहिए। कन्याओं के लिए व्रत विशेष फलदायक है। श्री जगदम्बा की कृपा से विघ्न दूर होते हैं। कथा के अन्त में बारम्बार "दुर्गा माता तेरी सदा ही जय" का उच्चारण करें।

॥ कथा प्रारम्भ॥

बृहस्पति जी बोले - हे ब्रह्मन्! आप अत्यन्त बुद्धिमान सर्वशास्त्र और चारों वेदों को जानने वालों में श्रेष्ठ हो। हे प्रभु! कृपा करके मेरा वचन सुनो। चैत्र, आश्विन, माघ और आषाढ़ के शुक्ल पक्ष में नवरात्र का व्रत और उत्सव क्यों किया जाता है ? हे भगवान! इस व्रत का क्या फल है ? किस प्रकार करना उचित है और पहले इस व्रत को किसने किया है ? सो विस्तार से कहो। बृहस्पति जी का ऐसा वचन सुनकर ब्रह्माजी कहने लगे कि हे बृहस्पते !

प्राणियों का हित करने की इच्छा से तुमने बहुत अच्छा प्रश्न किया। जो मनुष्य मनोरथ पूर्ण करने वाली दुर्गा, महादेव, सूर्य और नारायण का ध्यान करते हैं वे मनुष्य धन्य हैं। यह नवरात्र व्रत सम्पूर्ण कामनाओं को पूर्ण करने वाला है इसके करने से पुत्र चाहने वाले को पुत्र, धन चाहने वाले को धन, विद्या चाहने वाले को विद्या, और सुख चाहने वाले को सुख मिल सकता है।

इस व्रत के करने से रोगी मनुष्य का रोग दूर हो जाता है और कारागार में बन्द हुआ मनुष्य बन्धन से छुट जाता है। मनुष्य की तमाम आपत्तियाँ दूर हो जाती हैं। और उसके घर में सम्पूर्ण सम्पत्तियाँ आकर उपस्थित हो जाती हैं। बन्ध्या और काक बन्ध्या के इस व्रत के करने से पुत्र पैदा हो जाता है। समस्त पापों को दूर करने वाले इस व्रत के करने से ऐसा कौन सा मनोरथ है जो सिद्ध नहीं हो सकता। जो प्राणी इस अलभ्य मनुष्य की देह को पाकर भी नवरात्र का व्रत नहीं करता है वह माता पिता से हीन हो जाता है - अर्थात् उसके माता पिता मर जाते हैं और वह अनेक दुःखों को भोगता है। उसके शरीर में कुष्ठ हो जाता है और अंगहीन हो जाता है, उसके सन्तानोप्पत्ति नहीं होती और

इस प्रकार वह मूर्ख अनेक दुःख भोगता है। इस व्रत का न करने वाला निर्दयी मनुष्य धन और धान्य से रहित होकर भूख और प्यास के मारे पृथ्वी पर घूमता फिरता है और गूंगा हो जाता है। जो सधवा स्त्री भूल से इस व्रत को नहीं करती हैं वह पति हीन होकर नाना दुःख को भोगती हैं। यदि व्रत करने वाला मनुष्य सारे दिन का उपवास न कर सके तो एक समय भोजन करें। और उस दिन बान्धवों के सहित उस नवरात्र व्रत की कथा श्रवण करें। हे बृहस्पते ! जिसने पहले इस महाव्रत को किया उसका पवित्र इतिहास मैं तुम्हें सुनाता हूँ। तुम सावधान होकर सुनो। इस प्रकार ब्रह्मा जी का वचन सुन कर बृहस्पति जी बोले - हे ब्रह्मन्! मनुष्यों का कल्याण करने वाले इस व्रत के इतिहास को मेरे लिए कहो मैं सावधान होकर सुन रहो हूँ। आपकी शरण आये हुए मुझ पर कृपा करो। ब्रह्माजी बोले - पीठत नामक मनोहर नगर में एक अनाथ नाम का ब्राह्मण रहता था। वह भगवती का भक्त था। उसके सम्पूर्ण सद्गुणों से युक्त मानो ब्रह्मा की सबसे पहली रचना हो ऐसी यथार्थ नाम वाली सुमति नाम की एक अत्यन्त सुन्दर

पुत्री पैदा हुई। वह कन्या सुमति अपने पिता के घर बालकपन में अपनी सहेलियों के साथ क्रीड़ा करती हुई इस प्रकार बढ़ने लगी कि जैसे शुक्ल पक्ष की कला बढ़ती है। उसका पिता प्रतिदिन जब दुर्गा की पूजा और होम किया करता था उस समय वह भी नियम से वहाँ उपस्थित होती थी। एक दिन वह सुमति अपनी सखियों के साथ खेलने लग गई और भगवती के पूजन में उपस्थित नहीं हुई। उसके पिता को पुत्री की ऐसी असावधानी देखकर क्रोध आया और पुत्री से कहने लगा हे दुष्ट पुत्री ! आज प्रभात से तूने भगवती का पूजन नहीं किया, इस कारण मैं किसी कुष्ठी और दरिद्री मनुष्य के साथ तेरा विवाह करूँगा। इस प्रकार कुपति पिता का वचन सुनकर सुमति को बड़ा दुःख हुआ। और पिता से कहने लगी - हे पिता जी ! मैं आपकी कन्या हूँ। मैं आपके सब तरह से आधीन हूँ। जैसी आपकी इच्छा हो मेरा विवाह कर सकते हो। होगा वही जो मेरे भाग्य में लिखा है मेरा तो इस पर पूर्ण विश्वास है। मनुष्य न जाने कितने मनोरथों का चिंतन करता है पर होता वही है जो भाग्य में विधाता ने लिखा है। जो जैसा

कर्म करता है, उसको फल भी उसी कर्म के अनुसार ही मिलता है। क्योंकि कर्म करना मनुष्य के अधीन है पर फल दैव के अधीन है। जैसे अग्नि में पड़े हुए तृणादि उसको अधिक प्रदीप्त कर देते हैं उसी प्रकार अपनी कन्या के ऐसे निर्भयता से कहे हुए वचन सुनकर ब्राह्मण को और अधिक क्रोध आया। तब उसने अपनी कन्या का एक कुष्ठी के साथ विवाह कर दिया और अत्यन्त क्रुद्ध होकर पुत्री से कहने लगा जल्दी जाओ अपने कर्म का फल भोगो। देखें भला भाग्य के भरोसे रहकर क्या करती है। इस प्रकार से कहे हुए पिता के कटु वचनों को सुनकर सुमति मन में विचार करने लगी कि - अहो मेरा बड़ा दुर्भाग्य है जिससे मुझे ऐसा पति मिला। इस तरह अपने दुःख का विचार करती हुई वह सुमति अपने पति के साथ वन में चली गई और भयावने कुशा युक्त उस स्थान पर उन्होंने रात बड़े कष्ट से व्यतीत की। उस गरीब बालिका की ऐसी दशा देखकर भगवती दुर्गा पूर्व पुण्य के प्रभाव से प्रकट होकर सुमति से कहने लगी कि हे दीन ब्राह्मणी! मैं तुम पर प्रसन्न हूँ तुम जो चाहो सो वरदान मांग सकती हो। मैं प्रसन्न होने पर मन वांछित फल देने वाली हूँ। इस

प्रकार भगवती दुर्गा का वचन सुनकर ब्राह्मणी कहने लगी कि आप कौन हो जो मुझ पर प्रसन्न हुई हो, यह सब मेरे लिए कहो और अपनी कृपा दृष्टि से मुझ दीन दासी को कृतार्थ करो। ऐसी ब्राह्मणी का वचन सुनकर देवी कहने लगी कि मैं आदि शक्ति हूँ - और मैं ही ब्रह्मविद्या और सरस्वती हूं। मैं प्रसन्न होने पर प्राणियों का दुःख दूर कर उनको सुख प्रदान करती हूं - हे ब्राह्मणी ! मैं तुझ पर तेरे पूर्व जन्म के पुण्य के प्रताप से प्रसन्न हूं। तुम्हारे पूर्व जन्म का वृत्तांत सुनाती हूँ सुनो ! तू पूर्व जन्म में निषाद (भील) की स्त्री थी और अति पतिव्रता थी। एक दिन तेरे पति निषाद ने चोरी की। चोरी करने के कारण तुम दोनों को सिपाहियों ने पकड़ लिया और ले जाकर जेलखाने में क़ैद कर दिया। उन लोगों ने तेरे को और तेरे पति को भोजन भी नही दिया। इस प्रकार नवरात्र के दिनों में तुमने न तो कुछ खाया और न जल ही पिया। इसलिए नौ दिन तक नवरात्र का व्रत हो गया। हे ब्राह्मणी उन दिनों में जो व्रत हुआ उस व्रत के प्र ाव से प्रसन्न होकर तुम्हें मनोवांछित वस्तु दे रही हूँ। तुम्हारी जो इच्छा हो सो मांगो। इस प्रकार

दुर्गा के कहे हुए वचन सुनकर ब्राह्मणी बोली अगर आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो हे दुर्गे मैं आपको प्रणाम करती हूँ। कृपा कर मेरे पति के कोढ़ को दूर करो। देवी कहने लगी कि उन दिनों में जो तुमने व्रत किया तो उस व्रत के एक दिन का पुण्य अपने पति का कोढ़ दूर करने का अर्पण करो। मेरे प्रभाव से तेरा पति का कोढ़ से रहित और सोने के समान शरीर वाला हो जाएगा। ब्रह्माजी बोले कि इस प्रकार देवी के वचन सुनकर वह ब्राह्मणी बहुत प्रसन्न हुई और पति को निरोग करने की इच्छा से ठीक है, ऐसे बोली। तब उनके पति का शरीर भगवती दुर्गा की कृपा से कुष्ठहीन होकर अति कान्तियुक्त हो गया। जिसकी कान्ति के सामने चन्द्रमा की कान्ति भी क्षीण हो जाती है। वह ब्राह्मणी पति की मनोहर देह को देखकर देवी को अति पराक्रम वाली समझकर स्तुति करने लगी - हे दुर्गे! आप दुर्गति को दूर करने वाली, तीनों जगत का सन्ताप हरने वाली, समस्त दुखों को दूर करने वाली, रोगी मनुष्य को निरोग करने वाली, प्रसन्न होने पर मनवांछित वस्तु देने वाली और दुष्ट मनुष्यों का नाश करने वाली हो। तुम

ही सारे जगत की माता और पिता हो। हे अम्बे ! मुझ अपराधों रहित अबला को मेरे पिता ने कुष्ठी मनुष्य के साथ विवाह कर मुझे घर से निकाल दिया उनकी निकाली हुई मैं पृथ्वी पर घूमने लगी। आपने ही मेरा इस आपत्ति रूप समुद्र से उद्धार किया है। हे देवी ! मैं आपको प्रणाम करती हूँ। मुझ दीन की रक्षा करो ब्रह्मा जी बोले कि हे बृहस्पते ! इसी प्रकार उस सुमति ने मन से देवी की बहुत स्तुति की, उससे की हुई स्तुति सुनकर देवी को बहुत सन्तोष हुआ और ब्राह्मणी से कहने लगी - हे ब्राह्मणी ! तेरे उद्दालक नाम का अति बुद्धिमान, धनवान, कीर्तिमान और जितेन्द्रिय पुत्र शीघ्र ही होगा। ऐसे कहकर वह देवी उस ब्राह्मणी से फिर कहने लगी कि हे ब्राह्मणी और जो कुछ तेरी इच्छा हो वही मनवांछित वस्तु मांग सकती है। ऐसा भगवती दुर्गा का वचन सुनकर सुमति बोली कि हे दुर्गे ! अगर आप मेरे पर प्रसन्न हैं तो कृपा कर मुझे नवरात्र व्रत विधि बतलाइये। हे दयावती ! जिस विधि से नवरात्र व्रत करने से आप प्रसन्न होती हैं उस विधि को और उसके फल को मेरे से विस्तार से वर्णन करें। इस प्रकार ब्राह्मणी

के कहे वचन सुनकर दुर्गा कहने लगी कि हे ब्राह्मणी ! मैं तुम्हारे लिए सम्पूर्ण पापों को दूर करने वाली नवरात्र विधि बतलाती हूँ जिसको सुनने से तमाम पापों से छूटकर मोक्ष की प्राप्ति हो जाती है।

आश्विन मास के शुक्ल पक्ष को प्रतिपदा से लेकर नौ दिन तक विधि पूर्वक व्रत करें। यदि दिन भर का व्रत न कर सकें तो एक समय भोजन करें। पढ़े लिखे ब्राह्मणों से पूछ कर घट स्थापना करे और वाटिका बनाकर उसको प्रतिदिन जल से सींचें। महाकाली महालक्ष्मी और महासरस्वती इनकी मूर्तियां बनाकर उनको नित्य विधि सहित पूजा करें और पुष्पों से विधि पूर्वक अर्ध्य दें। बिजौरा के फूल से अर्घ्य देने से रूप की प्राप्ति होती है और जायफल से कीर्ति और दाख से कार्य की सिद्धि होती है। आँवले से सुख और केले से भूषण की प्राप्ति होती है। इस प्रकार फलों से अर्घ्य देकर यथा विधि हवन करें। खांड, घी, गेहूं, शहद, जौ, तिल, बिल्वपत्र, नारियल, दाख और कदम्ब इन से हवन करे। गेहूं से होम करने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। आंवले से कीर्ति और केले से पुत्र प्राप्त होता है। कमल से राजसम्मान और दाखों से सुख और

सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। खांड, घी, नारियल, शहद, जौ और तिल इनसे तथा फलों से होम करने से मनवांछित वस्तु की प्राप्ति होती है। व्रत करने वाला मनुष्य इस विधान से होम कर आचार्य को अत्यन्त नम्रता के साथ प्रणाम करें और यज्ञ की सिद्धि के लिए उसे दक्षिणा दें। इस महाव्रत को पहले बताई हुई विधि के अनुसार जो कोई करता है उसके सब मनोरथ सिद्ध हो जाते हैं। इसमें तनिक भी संशय नहीं है इस नौ दिनों में जो कुछ दान आदि दिया जाता है, उसका करोड़ों गुना फल मिलता है इस नवरात्र के व्रत करने से ही अश्वमेघ यज्ञ का फल मिलता है। हे ब्राह्मणी ! इस संपूर्ण कामनाओं को पूर्ण करने वाले उत्तम व्रत को तीर्थ, मन्दिर अथवा घर में ही विधि के अनुसार करें। ब्रह्मा जी बोले कि हे बृहस्पते ! इस प्रकार ब्राह्मणी को व्रत की विधि और फल बताकर देवी अन्तर्ध्यान हो गई। जो पुरुष या स्त्री इस व्रत को भक्ति पूर्वक करते हैं वह इस लोक में सुख पाकर अन्त में दुर्लभ मोक्ष को प्राप्त होता है। हे बृहस्पते ! यह दुर्लभ व्रत का महात्म्य मैंने तुम्हारे लिए बतलाया है। ऐसे ब्रह्माजी के

वचन सुनकर बृहस्पति जी आनन्द के कारण रोमांचित हो गए और ब्रह्मा जी से कहने लगे कि हे ब्रह्मन्! आपने मुझ पर अति कृपा की जो अमृत के समान इस नवरात्र व्रत का महात्म्य सुनाया हे प्रभो! आपके बिना और कौन इस महात्म्य को सुना सकता है ? ऐसे बृहस्पति जी के वचन सुनकर ब्रह्मा जी बोले कि हे बृहस्पते! तुमने सब प्राणियों के हित करने वाले इस अलौकिक व्रत को पूछा इसलिए तुम धन्य हो। यह भगवती शक्ति सम्पूर्ण लोकों की पालन करने वाली है, इस महादेवी के प्रभाव को कौन जान सकता है।

श्री दुर्गा अष्टमी व्रत कथा

विधि - यह त्यौहार आश्विन शुक्ल पक्ष अष्टमी को आता है। इस दिन दुर्गा देवी की पूजा की जाती है। भगवती दुर्गा को उबाले हुए चने, हलुआ, पूड़ी, खीर, पूआ, आदि का भोग लगाया जाता है। बहुत से व्यक्ति इस महाशक्ति को प्रसन्न करने के लिए हवन आदि भी करते है। जहां शक्ति को अधिक मान्यता दी जाती है वहाँ बहुत बड़ा उत्सव मनाया जाता है। इस दिन कन्या लांगुरा जिमावे। देवी जी की जोत करें।

आरती सबका भला

सबका भला करो भगवान, सबके दुःख हरो भगवान।
सबके आप संवारो काम, जय हो तेरी यश भगवान॥

तुमको बार बार प्रणाम, सबको सन्मति दो भगवान।
उपजे सबके हृदय में ज्ञान, होवे दूर सभी अज्ञान॥

मिलकर करें तेरा गुण गान, सबके पूर्ण कर दो काम।
कर दो सब मुश्किल आसान, देश के सभी बनें विद्वान॥

सबके सब होवें बलवान्, धन से सभी बने धनवान।
सेवा का हो मन में ध्यान, आज्ञाकारी होवे सन्तान॥

होवे मात पिता को मान, होवे गुरुजनों का मान।
गौ ब्राह्मण को हो सम्मान, भारत की हो ऊँची शान॥
हम माँगत हैं वह वरदान, सारे विश्व का हो कल्याण।

आरती श्री कुंजबिहारी जी की

आरती कुंजबिहारी की, गिरधर कृष्ण मुरारी की।
गले में वैजन्ती माला, बजाये मुरली मधुर बाला।
श्रवण में कुण्डल झलकाला, नन्द के आनन्द नन्द लाला।
नैनन बीच, बसाहि उर बीच, सुरतिया रूप उजारी की।
गिरधर कृष्ण मुरारी की, आरती कुंजबिहारी की।
कनकमय मोर मुकुट बिलसे, देवता दर्शन को तरसे।
गगनसे सुमन बहुत बरसे बजत मुंह चंग और मृदंगग्वालिनी संग।
लाज रख गोप कुमारी की, गिरधर कृष्ण मुरारी की,
आरती कुंजबिहारी की।

जहां ते प्रकटी हैं गंगा, कलुष कलि हरनी श्रीगंगा।
धरी शिव जटा के बीच, राधिखा गौर श्याम पटछोर की।
छवि निरखें बनवारी की, गिरधर कृष्ण मुरारी की।
आरती कुंजबिहारी की।

चहुँ दिखि गोप ग्वाल धेनु, बाज रही जमुना तट बेनु।
हँसत मुख मन्द, वरन सुख कन्द वृन्दावन चन्द, टेर सुनि लेउ भिखारी की। गिरधर कृष्ण मुरारी की,
आरती कुंजबिहारी की।

आरती श्री गंगा जी

ओ३म् जय गंगे माता, मैया जय गंगे माता।
जो नर तुमको ध्याता, मनवांछित फल पाता॥

चन्द्र सी ज्योति तुम्हारी, जल निर्मल आता।
शरण पड़े जो तेरी, सो नर तर जाता॥ ओ३म् जय...

पुत्र सगर के तारे, सब जग को ज्ञाता।
कृपा दृष्टि हो तुम्हारी, त्रिभुवन सुख दाता॥ ओ३म् जय...

एक बार जो प्राणी, शरण तेरी आता।
यम की त्रास मिटाकर, परमगति पाता॥ ओ३म् जय..

आरती मातु तुम्हारी, जो नर नित गाता।
सेवक वही सहज में, मुक्ति हो पाता॥ ओ३म् जय...

तेरे पूजन को भगवान

तेरे पूजन को भगवान बना मन मन्दिर आलीशान।
किसने जानी तो़री माया किसने भेद तिहारा पाया।
हारे ऋषि मुनि कर ध्यान बना मन मंदिर आलीशान।
तू ही जल में तू ही थल में तू ही मन में तू ही वन में।
तेरा रूप अनूप महान् बना मन मंदिर आलीशान।
तू हर गुल में तू बुल-बुल में तू हर डार के हर पातल में।
तू हर दिल में मूर्तिमान बना मन मंदिर आलीशान।
तूने राजा रंक बनाये तूने भिक्षुक राज बिठाये।
तेरी लीला ऐसी महान् बना मन मंदिर आलीशान।
भनु श्री गोविन्द परमानन्द करुणाकेद राम हरे।
श्री दशरथनंदन असुरनिकंदन जन उस चंदनश्याम हरे।
कृष्ण मुरारे नन्द दुलारे प्रीतम प्यारे जय कृष्ण हरे।
जय राम हरे जय राम हरे जय कृष्ण हरे जय कृष्ण हरे।

आरती श्री कृष्ण जी की

ओ३म् जय श्री कृष्ण हरे प्रभु जय श्री कृष्ण हरे।
भगतन के दुःख टारे पल में दूर करे ! जय श्री कृष्ण हरे॥
परमानन्द मुरारी मोहन गिरधारी,
जै रस रास बिहारी जै गिरधारी। ओम जय०
कर कंचन कटि कंचन श्रुति कुण्डल बाला,
मोर मुकुट पीताम्बर सोहे बनमाला। ओम जय०
दीन सुदामा तारे, दरिद्र दुःख टारे,
जग के फन्द छुड़ाये भव सागर तारे। ओम जय०
हिरण्यकश्यप संहारे नर हरि रूप धरे,
पाहन से प्रभु प्रकटे जन के बीच पड़े। ओम जय०
केशी केश विदारे नलकूबर तारे,
दामोदर छवि सुन्दर भगतन रखवारे। ओम जय०
काला नाग नथैया नटवर छवि सोहे,
फन फन करत ही नागन मन मोहे। ओम जय०
राज्य विभीषण थापे सीता शोक हरे,
द्रुपद सुता पत राखी करुणा लाज भरे। ओम जय०

आरती श्री कृष्ण जी की

जय श्री कृष्ण हरे, प्रभु जय जय गिरधारी।
दानव-दल बलिहारी, गो-द्विज हितकारी॥
जय गोविन्द दयानिधि, गोवर्धन धारी।
वंशीधर बनवारी, व्रज-जन प्रियकारी॥ जय श्री०
गणिका गीध अजामिल गजपति भयहारी।
आरत-आरति हारी, जय मंगल कारी॥ जय श्री०
गोपालक गोपेश्वर, द्रौपदी दुखदारी।
शबर-सुता सुखकारी, गौतम-तिय तारी॥ जय श्री०
जन प्रहलाद प्रमोदक, नरहरि तनु धारी।
जन मन रंजनकारी, दिति-सुत संहारी॥ जय श्री०
टिट्टिभ-सुत संरक्षक, रक्षक मंझारी।
पाण्डु सुवन शुभकारी, कौरव मद हारी॥ जय श्री०
मन्मथ-मन्मथ मोहन, मुरली-रव कारी।
वृन्दाविपिन विहारी, यमुना तट चारी॥ जय श्री०
अघ-बक-बकी उधारक, तृणावर्त तारी।
बिधि-सुरपति मदहारी, कंस मुक्तिकारी॥ जय श्री०
शेष, महेश, सरस्वती, गुन गावत हारी।
कल कीरति विस्तारी, भक्त भीति हारी॥ जय श्री०
'नारायण' शरणागत, अति अघ अघहारी।
पद-रज पावनकारी, चाहत चितहारी॥ जय श्री०

श्री कृष्ण चालीसा

॥ चौपाई ॥

जय मन मोहन शाम मुरारे। जय जय जय बृजराज दुलारे॥
जय जग तारण कारण स्वामी। जय बंसीधर अन्तर्यामी॥
जय शकटा-सुर अघ संहारी। जय घनश्याम गोवर्धन धारी॥
जय जसुदा सुत जग नंद नंदन। जय तेरी हो असुर निकंदन॥
पूतना कपट रूप धर आई। प्रभो आपने मार मुकाई॥
श्री यमुना जल पावन कीना। अभय दान भगतन को दीना॥
मान इन्द्र का तोड़ दिखाया। प्रभो आपकी अद्‌भुत माया॥
लेन परीक्षा ब्रह्मा आए। लीला देख के सीस नवाए॥
जय माधव जय जय बनवारी। जय जय तृणावर्त कंसारी॥
जय गोपाल सदा सुखदाई। जय केशव जय जय यदुराई॥
जय अर्जुन के सखा प्यारे। जय पांडु सुत तारन हारे॥
जय जय जय जग बन्धन टारन। जय संतन के दुःख निवारण॥
संदीपन को शोक मिटाया। उसका मोया पुत्र जिवाया॥
चेदी राज महा हंकारी। शत से अधिक दीन जिस गारी॥
अन्तकाल पापी फल पाया। आपने उसका सीस उड़ाया॥
मधु केटभ के खल संहारे। निज भगतन के काज सुवारे॥
जय सूर साधु विप्र हितकारी। जय मधुसूदन जय बनवारी॥

जय जय पुरुष पुरान अनन्ता। जय लीलाधर जय भगवन्ता॥
जय जय जय घनशाम दयाला। जय अविनाशी परम कृपाला॥
जय सत चित आनन्द स्वरूपा। जय जय जय भूपन के भूपा॥
एक समय जब माटी खाई। मात यशोदा मारन आई॥
आपने मुख जब खोल दिखाया। सकल जगत तिस में दिखलाया॥
देखत भई चकित महितारी। फिर प्रभु माया अपनी डारी॥
मन हर माखन चोर सदाए। अद्भुत-अद्भुत दृश्य दिखाए॥
जय जगदीश चराचर करता। जय प्रतिपालक हरता भरता॥
जय सुखसदन क्लेश निवारण। जय जय जय जग तारन कारन॥
जय पूरन जय जय परमेश्वर। जय आनन्द घन जय सर्वेश्वर॥
जय घट घट की जानन हारे। जय वसुदेव देवकी प्यारे॥
जब अर्जुन को मोह ने घेरा। आया उसको नजर अन्धेरा।
कर्म अकर्म की सुरत बिसारी। आया अन्त वह शरण तिहारी॥
उसको गीता ज्ञान सुनाया। अपना रूप विराट दिखाया॥
विजय पांडवों की करवाई। नाश हुए पापी अन्याई॥
जय गीता के गावन वाले। जय जय विजय दिलावन वाले॥
जय अर्जुन के मित्र प्यारे। जय जग बन्धु जगत से न्यारे॥
जय कारण जय कार्य रूपा। जय जय अलख अभेद अरूपा॥
जय जय निराकार साकारा। जय जय जय जय विश्व आधारा॥

धर्म पुत्र जब द्रोपदी हारी। परवस हुई आन बेचारी॥
पापी नयन करन जब लागे। रुदन किया उस आपके आगे॥
उसके आपने चीर बढ़ाये। दुर्योधन जैसे लज्जाए॥
कृपा आपकी जिस पर होवे। जन तेरा काहे को रोवे॥
जय जय द्रोपदी कष्ट निवारन। जय जय पांडव भक्त उभारन॥
जय जय जय दीनन हितकारी। जय जय बाल मुकन्द गिरधारी॥
जय अच्युत जय जय असुरारी। जय जय चक्र सुदर्शन धारी॥
जय ईश्वर जय सर्व व्यापक। जय योगीश्वर जय प्रतिपालक॥
विप्र सुदामा मित्र तिहारा। अति दरिद्रि होया दुखयारा॥
आतुर हो आया तव द्वारे। आपने उसके कष्ट निवारे॥
अति धनाढ्य ब्राह्मण को कीना। धन उसको अतुलित प्रभु दीना॥
आपने मित्र भाव अपनाया। जग में दीन दयाल सदाया॥
जय भगतन सन्तन हितकारी। जय त्रैलोकी नाथ बनवारी॥
जय जय विश्व रूप प्रभु प्यारे। जय जसुमति सुत नन्द दुलारे॥
जय अक्षर अव्यय अधिकारी। जय श्रुति पूजय प्रभु पापारी॥
जय विश्वपति जय हलधर भरता। जय दुःखहरण सुखों के दाता॥
एक समय एक नन्दा नाई दुर्योधन की सेवा भुलाई॥
रूप उसी का आपने धारा। सब कुछ उसका काज सुवारा॥
फिर उस नाई दर्शन पाया। भगत जान निज धाम पठाया॥

जात पात ना आपको प्यारी। भगतन को दीनी सरदारी॥
जय समदर्शी कृष्ण मुरारी। जय जय जय भगतन भयहारी॥
जय जय द्वारकेश सुखदाई जय जय प्रभु जय जय प्रभुताई॥
जय गोपेश गोबिन्द गोपाला। जय करूणाकर कृष्ण कृपाला॥
जय सूक्ष्म जय महा स्थूला। जय जय जगत वृक्ष के मूला॥
दुर्योधन के मन में आया। पांडवों के संग कपट कमाया॥
लाखा गृह इक तैयार कराकर। उसके बीच उन्हें फसाकर॥
बाहर से उसे आग लगाई। भस्म होयें जिमी पॉडव भाई॥
प्रभो ! आपने की चतुराई। लाख गृह से सुरंग बनाई॥
जय पांडु सुत तारन हारे। जय दुष्टों को मारन हारे॥
जय जय जगन्नाथ सुखरासी। जय अखंड अतुलित अविनाशी॥
जय जय वेद पुराण बुलावें। जय जय ऋषि मुनि जन गावें॥
जय जय हुंडी तारन वाले। जय नरसी दुःख टारन वाले॥
विदुर भगत के जब घर आए। उसकी पत्नी पत्र खिलाए॥
विदुर भगत ने आकर रोका। कदली छाल देन से टोका॥
इस प्रकार तब आप उचारे। प्रेमी भगत मुझे हैं प्यारे॥
लगी मुझे हैं छाल प्यारी। और गिरी की चाल न्यारी॥
जय जय प्रेम भाव के प्यारे। जय जय आद अन्त से न्यारे॥
जय जय विश्वबन्धु जगपालक। जय जग पिता यशोदाबालक॥

जय जय सूरदास के प्यारे। जय आनन्द घनश्याम मुरारे॥
जय जय मोर मुकट के धारी। जय पीताम्बर सहित मुरारी॥
जो श्रीकृष्ण चालीसा गावे। कष्ट ओसदे निकट न आवे॥
दुःख दरद सब होवन दूर। वह धन धान्य से रहे भरपूर॥
कृष्ण चालीसा अति प्यारा। मुक्ति भुक्ति को देवन हारा॥
जय जय जय श्री कृष्ण अनन्ता। जय जय जय पूरण भगवन्ता॥

शयन की आरती

शयन करो शयन करो महाराज अब प्रभु शयन करो॥
फूलों की मैं सेज बिछाऊं मोर पंख का चंवर झुलाऊं।
सुन्दर बदन विशाल अब तुम शयन करो॥
जीव उदारन कारन स्वामी, बहुत फिरे हो अन्तरयामी।
चरण दबाऊं नन्द लाल, अब तुम शयन करो॥
वेद पुराण तेरा यश गावे, फिर भी तेरा अन्त ना पावे।
ऐसे दीन दयाल, अब तुम शयन करो॥
भक्ति-मुक्ति के देवन हारे, भक्तों के हो प्राण प्यारे।
दुष्टों के हो काल, अब प्रभु शयन करो॥
हाथ जोड़ कर आरती गाऊं, प्रेम भाव से तुम्हें सुलाऊं॥
ऐसे जगदाधार, अब तुम शयन करो॥

गीता-सार

★ क्यों व्यर्थ की चिन्ता करते हो ? किससे डरते हो? कौन तुम्हें मार सकता है ? आत्मा न पैदा होती है, न मरती है।

★ जो हुआ, वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है, वह अच्छा हो रहा है, जो होगा, वह भी अच्छा ही होगा। तुम भूत का पश्चाताप न करो। भविष्य की चिन्ता न करो। वर्तमान चल रहा है।

★ तुम्हारा क्या गया, जो तुम रोते हो ? तुम क्या लाये थे, जो तुमने खो दिया ? तुमने क्या पैदा किया था, जो नाश हो गया ? न तुम कुछ लेकर आए, जो लिया, यहीं से लिया। जो दिया, यहीं पर दिया। जो लिया, इसी (भगवान) से लिया। जो दिया इसी को दिया। खाली हाथ आए, और खाली हाथ चले। जो आज तुम्हारा है, कल और किसी का था, परसों किसी और का होगा। तुम इसे अपना समझ कर मग्न हो रहे हो। बस यही प्रसन्नता तुम्हारे दुःखों

का कारण है।

★ परिवर्तन संसार का नियम है। जिसे तुम मृत्यु समझते हो, वही तो जीवन है। एक क्षण में तुम करोड़ों के स्वामी बन जाते हो, दूसरे ही क्षण में तुम दरिद्र हो जाते हो। मेरा-तेरा, छोटा-बड़ा, अपना-पराया, मन से मिटा दो, फिर सब तुम्हारा है, तुम सबके हो।

★ न यह शरीर तुम्हारा है, न तुम शरीर के हो। यह अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी, आकाश से बना है और इसी में मिल जायेगा। परन्तु आत्मा स्थिर है फिर तुम क्या हो ?

★ तुम अपने आपको भगवान के अर्पित करो। यही सबसे उत्तम सहारा है। जो इसके सहारे को जानता है वह भय, चिन्ता, शोक से सर्वदा मुक्त है।

★ जो कुछ भी तू करता है, उसे भगवान को अर्पण करता चल। ऐसा करने से सदा जीवन-मुक्त को आनंद अनुभव करेगा।

श्री हनुमान चालीसा

॥ दोहा॥

श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि।
बरनऊं रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि॥ १॥
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरों पवन-कुमार॥
बल बुद्धि विद्या देहु मोहिं, हरहु कलेश विकार॥ २॥

॥ चौपाई॥

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर,
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर॥ १॥
रामदूत अतुलित बल धामा,
अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा॥ २॥
महावीर बिक्रम बजरंगी,
कुमति निवार सुमति के संगी॥ ३॥
कंचन बरन बिराज सुबेसा,

कानन कुंडल कुंचित केसा॥ ४॥

हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजे,

काँधे मूंज जनेउ साजै॥ ५॥

शंकर सुवन केसरी नन्दन,

तेज प्रताप महा जग वन्दन॥ ६॥

विद्यावान गुनी अति चातुर,

राम काज करिबे को आतुर॥ ७॥

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया,

राम लखन सीता मन बसिया॥ ८॥

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा,

विकट रूप धरि लंक जरावा॥ ९॥

भीम रूप धरि असुर संहारे,

रामचन्द्र के काज संवारे॥ १०॥

लाय सजीवन लखन जियाये,

श्री रघुबीर हरषि उर लाये॥ ११॥

रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई,

तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई॥ १२॥

सहस बदन तुम्हरो जस गावैं,

अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं॥ १३॥

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा,

नारद सारद सहित अहीसा॥ १४॥

जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते,

कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते॥ १५॥

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा,

राम मिलाय राज पद दीन्हा॥ १६॥

तुम्हरो मन्त्र विभीषन माना,

लंकेश्वर भये सब जग जाना॥ १७॥

जुग सहस्त्र जोजन पर भानू,

लील्यो ताहि मधुर फल जानू॥ १८॥

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं,

जलधि लांघि गए अचरज नाहीं॥ १९॥

दुर्गम काज जगत के जेते,

सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते॥ २०॥

राम दुआरे तुम रखवारे,

होत न आज्ञा बिनु पैसारे॥ २१॥

सब सुख लहै तुम्हारी सरना,

तुम रक्षक काहू को डर ना॥ २२॥

आपन तेज सम्हारो आपे,

तीनों लोक हाँक ते काँपै॥ २३॥

भूत पिसाच निकट नहिं आवै,

महावीर जब नाम सुनावै॥ २४॥

नासे रोग हरै सब पीरा,

जपत निरंतर हनुमत बीरा॥ २५॥

संकट तें हनुमान छुड़ावै,

मन क्रम बचन ध्यान जो लावै॥ २६॥

सब पर राम तपस्वी राजा,

तिन के काज सकल तुम साजा॥ २७॥

और मनोरथ जो कोई लावै,
सोई अमित जीवन फल पावै॥ २८॥

चारों जुग परताप तुम्हारा,
है परसिद्ध जगत उजियारा॥ २९॥

साधु सन्त के तुम रखवारे,
असुर निकंदन राम दुलारे॥ ३०॥

अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता,
अस बर दीन जानकी माता॥ ३१॥

राम रसायन तुम्हरे पासा,
सदा रहो रघुपति के दासा॥ ३२॥

तुम्हरे भजन राम को पावै,
जनम जनम के दुःख बिसरावै॥ ३३॥

अन्त काल रघुबर पुर जाई,
जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई॥ ३४॥

और देवता चित्त न धरई,

हनुमत सेई सर्व सुख करई॥ ३५॥
संकट कटै मिटै सब पीरा,
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा॥ ३६॥
जय जय जय हनुमान गोसाई,
कृपा करहु गुरुदेव की नाईं॥ ३७॥
जो सत बार पाठ कर कोई,
छुटहिं बंदि महासुख होई॥ ३८॥
जो यह पढ़ैं हनुमान चलीसा,
होय सिद्धि साखी गौरीसा॥ ३९॥
तुलसी दास सदा हरि चेरा,
कीजै नाथ हृदय महँ डेरा॥ ४०॥

॥ दोहा॥

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप।

संकटमोचन हनुमानाष्टक

बाल समय रवि भक्षि लियो तब,
तीनहुँ लोक भयो अँधियारो।
ताहि सों त्रास भयो जग को,
यह संकट काहु सों जात न टारो।
देवन आनि करी बिनती तब,
छांड़ि दियो रवि कष्ट निवारो।
को नहिं जानत है जग में कपि,
संकटमोचन नाम तिहारो। को-१
बालि के त्रास कपीस बसै गिरि,
जात महाप्रभु पंथ निहारो।
चौंकि महा मुनि साप दियो तब,
चाहिय कौन बिचार बिचारो।
कै द्विज रूप लिवाय महाप्रभु,
सो तुम दास के सोक निवारो। को-२
अंगद के संग लेन गए सिय,
खोज कपीस यह बैन उचारो।

जीवत ना बचिहौ हम सों जु,

बिना सुधि लाए इहाँ पगु धारो।

हेरि थके तट सिंधु सबै तब,

लाय सिया-सुधि प्रान उबारो। को-३

रावन त्रास दई सिय को सब,

राक्षसि सों कहि सोक निवारो।

ताहि समय हनुमान महाप्रभु,

जाय महा रजनीचर मारो।

चाहत सीय असोक सों आगि सु,

दै प्रभु मुद्रिका सोक निवारो। को-४

बान लग्यो उर लछिमन के तब,

प्रान तजे सुत रावन मारो।

लै गृह बैद्य सुषेन समेत,

तबै गिरि द्रोन सु बीर उपारो।

आनि सजीवन हाथ दई तब,

लछिमन के तुम प्रान उबारो। को-५

रावन जुद्ध जु अजान कियो तब,

नाग कि फांस सबै सिर डारो।

श्री रघुनाथ समेत सबै दल,
मोह भयो यह संकट भारो।
आनि खगेश तबै हनुमान जु,
बन्धन काटि सुत्रास निवारो। को-६
बंधु समेत जबै अहिरावन,
लै रघुनाथ पाताल सिधारो।
देविहिं पूजि भली विधि सों बलि,
देउ सबै मिलि मंत्र बिचारो।
जाय सहाय भयो तब ही,
अहिरावन सैन्य समेत संहारो। को-७
काज किए बड़ देवन के तुम,
बीर महाप्रभु देखि बिचारो।
कौन सो संकट मोर गरीब को,
जो तुमसों नहिं जात है टारो।
बेगि हरो हनुमान महाप्रभु,
जो कछु संकट होय हमारो। को-८

॥ दोहा॥

लाल देह लाली लसे, अरु धरि लाल लंगूर,
बज्र देह दानवदलन, जय जय जय कपि सूर।

सोमवार की आरती

आरती करत जनक कर जोरे,
बड़े भाग्य रामजी घर आए मोरे। टेक।

जीत स्वयम्बर धनुष चढ़ाए,
सब भूपन के गर्व मिटाए।

तोरि पिनाक कीए दुइ खण्डा,
रघुकुल हर्ष रावण भय शंका।

आई है सीता संग सहेली,
हरषि निरखी वर माला फेरी।

गज मोतियन के चौक पुराए,
कनक कलश भरि मंगल गाए।

कंचन थार कपूर की बाती,
सुर नर मुनि जन आए बराती।

फिरत भाँवरें बाजा बाजे,
सिया सहित रघुबीर विराजे।

धनि-धनि राम लखन दोउ भाई,
धनि दशरथ कौशल्या माई।

राजा दशरथ जनक विदेही,
भरत शत्रुहन परम सनेही।

मिथिलापुर में बजत बधाई,
दास मुरारी स्वामी आरती गाई।

मंगलवार की आरती

(आरती श्री हनुमान जी)

आरती कीजै हनुमान लला की।
दुष्ट दलन रघुनाथ कला की॥

जाके बल से गिरिवर काँपै। रोग दोष जाके निकट न झाँपै॥ आरती.

अंजनि पुत्र महा बलदाई। सन्तन के प्रभु सदा सहाई॥ आरती.

दे बीरा रघुनाथ पठाये। लंका जारि सीय सुधि लाये॥ आरती.

लंका सो कोट समुद्र सी खाई। जात पवनसुत बार न लाई॥ आरती.

लंका जारि असुर संहारे। सीयारामजी के काज सँवारे॥ आरती.

लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे। आनि सँजीवन प्रान उबारे॥ आरती.

पैठि पताल तोरि जम-कारे। अहिरावन की भुजा उखारे॥ आरती.

बायें भुजा असुरदल मारे। दाहिने भुजा संतजन तारे॥ आरती.

सुर नर मुनि आरती उतारें। जय जय जय हनुमान उचारे॥ आरती.

कंचन थार कपूर लौ छाई। आरती करत अजना माई॥ आरती.

जो हनुमान जी की आरती गावै। बसि बैकुण्ठ परम पद पावै॥ आरती.

बुधवार की आरती

आरती युगल किशोर की कीजे,
तन मन धन न्योछावर कीजे। टेक।
गौर श्याम मुख निरखत रीझे,
हरि को स्वरूप नयन भरि पीजे।
रवि शशि कोटि बदन की शोभा,
ताहि निरखि मेरा मन लोभा।
ओढ़े नील पीत पट सारी,
कुंज बिहारी गिरवर धारी।
फूलन की सेज फूलन की माला,
रत्न सिंहासन बैठे नन्दलाला।
मोरे मुकुट मुरली कर सोहे,
नटवर कल देखि मन मोहे।
कंचन थाल कपूर की बाती,
हरि आये निर्मल भई छाती।
श्री पुरुषोत्तम गिरवरधारी,
आरती करैं सकल ब्रजनारी।
नन्द नन्दन वृषभानु किशोरी,
परमानन्द स्वामी अविचल जोरी।

बृहस्पतिवार की आरती

जय जय आरती राम तुम्हारी,
राम दयालु भक्त हितकारी। टेक।

जनहित प्रगटे हरि व्रतधारी, जन प्रहलाद प्रतिज्ञा पाली।

द्रुपदसुता का चीर बढ़ायो, गज के काज पयादे धायो।

दश सिर छेदी बीस भुजा तोरे, तेतीस कोटि देव बंदी छोरे।

छत्र लिए कर लक्ष्मण भ्राता, आरति करत कौशिल्या माता।

शुक शारद नारद मुनि ध्यावें, भरत शत्रुहन चँवर डुरावें।

राम के चरण गहे महावीरा, ध्रुव प्रहलाद बालिसुत वीरा।

लंका जीती अवध हरि आए, जब सन्तन मिलि मंगल गाए।

सीता सहित सिंहासन बैठे, रामानंद स्वामी आरती गाए।

शुक्रवार की आरती

आरती लक्ष्मण बालजती की,
असुर संहारन प्राणपति की। टेक।

जगत जोति अवधपुर राजे, शेषाचल पे आप विराजे।
घंटा ताल पखावज बाजे, कोटि देव मुनि आरती साजे।
क्रीट मुकुट कर धनुष विराजे, तीन लोक जाकी शोभा राजै।
कंचन थाल कपूर सुहाइ, आरती करत सुमित्रा माई।
आरती कीजे हरि की तैसी, ध्रुव प्रहलाद विभीषण जैसी।
प्रेम मगन होय आरती गावै, बसे बैकुण्ठ बहुरि नहि आवै।
भक्ति हेतु लाड लडावै, जन घनश्याम परम पद पावै।

शनिवार की आरती

आरती कीजै नरसिंह कुँवर की,
वेद विमल यश गाऊँ मेरे प्रभु जी। टेक।

पहली आरती प्रहलाद उबारे, हिरनाकुश नख उदर बिदारे।
दूसरी आरती वामन देवा, बलि के द्वारे पधारे हरिदेवा।
तीसरी आरती ब्रह्म पधारे, सहसबाहु के भुजा उखारे।
चौथी आरती असुर संहारे, भक्त विभीषण लंक पधारे।
पांचवी आरती कंस पछारे, गोपी ग्वाल सखा प्रतिपाले।
तुलसी को पत्र कंठ गणि हीरा, हरषि निरखि गावै दास कबीरा।

रविवार की आरती

कहँ लगि आरती दास करेंगे,

सकल जगत जाकी जोति विराजे।

सात समुद्र जाके चरणनि बसे,

कहा भयो जल कुम्भ भरे हो राम।

कोटि भानु जाके लख की शोभा,

कहा भयो मंदिर दीप धरे हो राम।

भार अठारह रोमावलि जाके,

कहा भयो नैवेद्य धरे हो राम।

छप्पन भोग जाके प्रतिदिन लागें,

कहा भयो नैवेद्य धरे हो राम।

अमित कोटि जाके बाजा बाजैं,

कहा भयो झनकार करे हो राम।

चार वेद जाके मुख की शोभा,

कहा भयो ब्रह्मवेद पढ़े हो राम।

शिव सनकादिक आदि ब्रह्मादिक,

नारद मुनि जाको ध्यान धरें हो राम

हिम मंदार जाको पवन झकोरें,

कहा भयो शिर चंवर दुरे हो राम।

लख चौरासी बंद छुड़ाये,

केवल हरियश नामदेव गाये।

अमृत वाणी

करता हूँ मैं वन्दना, नतशिर बारम्बार,

तूझे देव परमात्मन् मंगल शिव शुभकार॥ १॥

अंजलि पर मस्तक किये, विनय भक्ति के साथ,

नमस्कार मेरा तुझे, होवे जग के नाथ ॥ २॥

दोनों कर को जोड़ कर, मस्तक घुटने टेक,

तुझको हो प्रणाम मम, शत शत कोटि अनेक॥ ३॥

पाप हरण मंगल-करण, चरण शरण का ध्यान,

धार करूँ प्रणाम मैं, तुझ को शक्ति-निधान॥ ४॥

भक्ति भाव शुभ भावना, मन में भर भरपूर,

श्रद्धा से तुझ को नमूं, मेरे राम हजूर॥ ५॥

ज्योतिर्मय जगदीश हे, तेजोमय अपार,

परम पुरुष पावन परम, तुझको हो नमस्कार॥ ६॥

सत्यज्ञान आनन्द के, परम धाम श्रीराम,

पुलकित हो मेरा तुझे, होवे बहु प्रणाम॥ ७॥

बजरंग बाण

॥ दोहा॥

निश्च्यप्रेम प्रतीतते, विनय करैं सनमान।
तेहि के कारज सकल, शुभसिद्ध करें हनुमान॥

जय हनुमंत संत हितकारी। सुनि लीजै प्रभु अरज हमारी॥
जनके काज बिलम्ब न कीजै। आतुर दौरि महासुख दीजै॥
जैसे कूदि सिन्धु वहि पारा। सुरसा बदन पैठि विस्तारा॥
आगे जाई लंकिनी रोका। मारेहु लातु गई सुर लोका॥
जाय विभीषण को सुख दीन्हा। सीता निरखि परम पद लीन्हा॥
बाग उजारि सिन्धु महँ बौरा। अति आतुर यम कातर तोरा॥
अक्षय कुमार को मारि संहारा। लूम लपेटि लंक को जारा॥
लाह समान लंक जरि गई। जय जय धुनि सुर पुर महँ भई॥
अब बिलम्ब केहि कारन स्वामी। कृपा करहु उर अन्तरयामी॥
जय जय लक्ष्मण प्राण के दाता। आतुर होइ दुख करहु निपाता॥

जय गिरिधर जय जय सुख सागर। सुर समूह समरथ नागर॥
ॐ हनु हनु हनु हनुमन्त हठीले। बैरिहि मारु बज्र की कीले॥
गदा बज्र लै बैरिहिं मारो। महाराज प्रभुदास उबारो॥
उंकार हुंकार महावीर धावो। बज्र गदा हनु विलंब न लावो॥
ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमन्त कपीशा। ॐ हुँ हुँ हुँ हनु अरि उर शीशा॥
सत्य होहु हरि सत्य पायके। राम दूत धरमारु धायके॥
जय जय जय हनुमन्त अगाधा। दुख पावत जन केहि अपराधा॥
पूजा जप तप नेम अचारा। नहीं जानत हौं दास तुम्हारा॥
वन उपवन मग गिरि गृह माहिं। तुमरे बल हम डरपत नाहीं॥
पायँ परौं कर जोर मनावौं। यहि अवसर अब केहि गोरहावों।
जय अंजनिकुमार बलवन्ता। शंकर सुवन बार हनमन्ता॥
बदन कराल काल कुल घालक। राम सहाय सदा प्रतिपालक॥
भूत प्रेत पिशाच निशाचर। अग्नि बैताल काल मारीमर॥
इन्हें मारु तोहि सपथ रामकी। राखु नाथ मरजाद नाम की॥
जनक सुता हरि दास कहावो। ताकी शपथ विलंब न लावो॥

जय जय जय धुनि होत अकाशा। सुमिरत होत दुसह दुख नाशा॥
शरण शरण कर जोरि मनावों। यहि अवसर अब केहि गोहरावों॥
उठ उठ चल तोहि राम दोहाई। पाँय परों कर जोरि मनाई॥
ॐ चं चं चं चं चपल चलंता। ॐ हनुहनुहनुहनुहनुहनु हनुमन्ता॥
ॐ हं हं हाँक देत कपि चंचल। ॐ संसं सहम पराने खलदल॥
अपने जन को तुरन्त उबारो। सुमिरत होय आनंद हमारो॥
यहि बजरंग बाण जेहि मारे। ताहि कहो फिरि कौन उबारे॥
पाठ करै बजरंग बाण की। हनुमत रक्षा करैं प्राण की॥
यह बजरंग बाण जो जापै। तेहि ते भूत प्रेत सब कांपै॥
धूप देय अरु जपै हमेशा। ताके तन नहिं रहे कलेशा॥

॥ दोहा॥

प्रेम प्रतीतिहि कपि भजे, सदा धरै उर ध्यान।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करैं हनुमान॥

णमोकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं,
णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं,
णमो लोए सव्वसाहूणं।

अर्थ :- अरिहंतो को नमस्कार हो, सिद्धों को नमस्कार हो, आचार्यों को नमस्कार हो, उपाध्यायों को नमस्कार हो और इस लोक के सभी साधुओं को नमस्कार हो।

णमोकार मंत्र का महत्व

एसो पंच णमोकारो, सव्वपावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होइ मंगलं ॥

अर्थ :- यह पंच णमोकार मंत्र सब पापों का नाश करने वाला है। इसके पढ़ने से हर प्रकार का मंगल होता है।

आरती श्री साईबाबा की

आरती साईबाबा। सौख्यदातार जीवा। चरणरजातलीं। द्यावा दासां विसांवा, भक्तां विसांवा॥ आ. ध्रु.॥ जालुनियां अनंग। स्वस्वरूपीं राहे दंग। मुमुक्षुजनां दावी। निज डोलां श्रीरंग॥ आ०॥ १॥ जया मनीं जैसा भाव। तयातैसा अनुभव। दाविसी दयाघना। ऐसी तुझी ही माव॥ आ०॥ २॥ तुमचें नाम ध्यातां हरे संसृतिव्यथा। अगाध तव करणी। मार्ग दाविसी अनाथा॥ आ०॥ ३॥ कलियुगीं अवतार। सगुणब्रह्म साचार। अवतीर्ण झालासे। स्वामी दत्त दिगंबर॥ द०॥ आ०॥ ४॥ आठां दिवसां गुरुवारीं। भक्त करिती वारी। प्रभुपद पहावया। भवभय निवारी। आ०॥ ५॥ माझा निजद्रव्यठेवा। तव चरणरजसेवा मागणें हेंचि आतां। तुम्हां देवाधिदेवा। आ०॥ ६॥ इच्छित दीन चातक। निर्मल तोय निजसूख। पाजावें माधवा या। साभाल आपुली भाक॥ आ०॥ ७॥
ॐ साईं श्री साईं जय जय साईं।
ॐ साईं श्री साईं जय जय साईं।

साईं गायत्री महामंत्र

ॐ शिरडीवासाय विद्महे सच्चिदानंदाय
धीमहि तन्नो साईं प्रचोदयात्

※ शब्दार्थ ※

ॐ - परमात्मा का नाम जिसके हजारों अर्थ है

शिरडी वासाय - शिरडी निवासी। शिरडी अर्थात गन्ना ईख। मंगल मूर्ति साईनाथ जो मिठास, माधुर्य की प्रतिमूर्ति हैं।

जिनके सत्संग से नीम ने अपना स्वभाव त्याग दिया, मीठी हो गई।

विद्महे - विद् अर्थात ज्ञान, इसीसे वेद बना है, ज्ञान स्वरूप, प्रज्ञा प्रदाता, प्रज्ञान ब्रह्म।

सच्चिदानंदाय	-	सत् चित एवं आनंद स्वरूप परमेश्वर।
धीमहि	-	धारण करें।
तन्नो	-	तत्+नः। तत् अर्थात् वह परमसत्ता। नः अर्थात् हम सब।
साई	-	स्वामी, सबका मालिक एक सा अर्थात् साक्षात। ई अर्थात् ईश्वर। साक्षात् ईश्वर
प्रचोदयात्	-	प्रेरित करे।

❋ भावार्थ ❋

मधुरतम साईं धाम, परम पावन शिरडी निवासी, ज्ञान स्वरूप, प्रज्ञा प्रदाता, सच्चिदानंद स्वरूप परमेश्वर को हम, अन्तरात्मा में धारण करें वे जगत के स्वामी (साई) हम सबकी बुद्धि को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करें।

मनसा देवी की आरती

जय मनसा माता, मैया जय मनसा माता।
जो नर तुमको ध्याता, मनवांछित फल पाता॥ टेक॥
जरत्कारु मुनि पत्नि, तुम बासुकि भागिनी, मैया तुम बासुक भगनी।
कश्यप की तुम कन्या, आस्तिक की माता, मैया आस्तिक की माता॥
गर्व-धन्वन्तरी-नाशिनी, हंसवाहिनी देवी, मैया हंसवाहिनी देवी।
सुर-नर-मुनि-गण ध्यावत, जय मनसा माता, मैया जय मनसा माता।
पर्वतवासिनी, संकटनाशिनी, अक्षय धनदात्री, मैया अक्षय धनदात्री।
पुत्र-पौत्रादि प्रदायनी, मनवांछित फलदाता, मैया मनवांछित फल दाता।
मनसा जी की आरती जो कोई नर गाता, मैया जो कोई नर गाता।
कहत शिवानन्द स्वामी सुख सम्पति पाता, मैया सब कुछ है पाता॥

विष्णु भगवान जी का ध्यान

शान्ताकारं भुजंगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वधारं गगनसदृशं मेघवर्ण शुभांगम्।।
लक्ष्मीकांतं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णु भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्।।

अर्थ :- जिसकी आकृति अतिशय शान्त है, जो शेषनाग की शय्या पर शयन किये हुए है, जिसकी नाभि में कमल है, जो देवताओं का भी ईश्वर ओर संपूर्ण जगत का आधार है, जो आकाश के सदृश सर्वत्र व्याप्त है, नीलमेघ के समान जिसका वर्ण है, अतिशय सुन्दर जिसके स [illegible] हैं, जो योगियों द्वारा ध्यान करके प्राप्त किया जाता [illegible] संपूर्ण लोकों का स्वामो है, जो जन्ममरण रूप [illegible] नाश करने वाला है, ऐसे श्री लक्ष्मीपति, कमल [illegible] भगवान् को मैं (शिरसे) प्रणाम करता हूँ।

मीरा बाई का एक भजन

पायो जी मैने श्याम रतन धन पायो।

जन्म जन्म की पूंजी पाई।

जग में न सबहिं खोवायो॥ पायो०॥

खर्च न लागे कोई चोर न लुटे।

दिन दिन होत सवायो॥ पायो०॥

सत की नाव खेवइया सतगुरु।

करि कृपा अपनायो॥ पायो०॥

मीरा के प्रभु गिरिधर नागर।

हरषि हरषि जस गायो॥ पायो०॥

आरती श्री गंगा माँ की

ओ३म् जय गंगे माता श्री जय गंगे माता।

जो नर तुमको ध्याता, मनवांछित फल पाता।। ओ३म्।।

चन्द्र सी जोत तुम्हारी, जल निर्मल आता।

शरण पड़े जो तेरी, सो नर तर जाता।। ओ३म्।।

पुत्र सगर के तारे, सब जग को ज्ञाता।

कृपा दृष्टि तुम्हारी, त्रिभुवन सुख दाता।। ओ३म्।।

एक ही बार जो तेरी, शरणागति आता।

यम की त्रास मिटाकर, परमगति पाता।। ओ३म्।।

आरती मात तुम्हारी जो नर नित गाता।

अर्जुन वही सहज में मुक्ति को पाता।। ओ३म्।।

जपुजी साहिब

१. ओंकार

परमात्मा केवल एक ही है।

सतिनामु करता पुरखु

उसका नाम सत्य है,
वह रचने वाला है।

निरभउ निरवैरु

वह डर ओर वैर से रहित है।

अकाल मूरति

उसके स्वरूप पर समय का कोई प्रभाव नहीं।

अजूनी

वह योनियों में नहीं आता

सैंभं

वह स्वयं प्रकाशमय है।

गुर प्रसादि

वह गुरु की कृपा से मिलता है।

आरती श्री विश्वकर्मा

ओ३म् जय श्री विश्वकर्मा,प्रभु जय श्री विश्वकर्मा।

सकल सृष्टि के कर्ता, रक्षक श्रुति धर्मा।।१।। ओ३म् जय ...

आदि सृष्टि में विधि को,श्रुति उपदेश दिया।

जीव मात्र का जग में, ज्ञान विकास किया।।२।। ओ३म् जय ...

ऋषि अंगिरा ने तप से,शान्ति नहीं पाई।

ध्यान किया जब प्रभु का, सकल सिद्धि आई।।३।। ओ३म् जय ...

रोग ग्रस्त राजा ने,जब आश्रय लीना।

संकल-मोचन बन कर, दूर दुःख कीना।।४।। ओ३म् जय ...

जब रथकार दम्पति,तुमरी टेर करी।

सुनकर दीन प्रार्थना, विपत्ति हरी सगरी।।५।। ओ३म् जय ...

एकानन चतुरानन, पंचानन राजे।

द्विभुज, चतुर्भुज, दसभुज, सकल रूप साजे।।६।। ओ३म् जय

ध्यान धरे जब पद का,सकल सिद्धि आवे।

मन दुविधा मिट जावे, अटल शान्ति पावे।।७।। ओ३म जय ...

'श्री विश्वकर्मा जी' की आरती, जो कोई नर गावे।

कहत गजानन्द स्वामी, सुख दम्पत्ति पावे।।८।। ओ३म् जय...

बालाजी की आरती

जय श्री बालाजी, महाराज, अनोखी तिहारी झांकी।
जय श्री घाटे वाले हनुमान, अनोखी तिहारी झांकी॥ टेक॥
तिहारे सिर पै मुकुट बिराजे, कानों में कुण्डल साजै।
गले बिराजे अनुपम हार, अनोखी तिहारी झांकी।
तिहारे नैन सुरमा साजे, माथे पै तिलक विराजै।
मुख में नागर पान लगा है, अनोखी तिहारी झांकी।
तेरे हाथ में लड्डू साजै, दूजे में ध्वजा विराजै।
बाबा या छवि की बलिहारी, अनोखी तिहारी झांकी।
तिहारे अंग में चोला साजै, ऊपर से बर्क विराजै।
बाबा रोम रोम में राम, अनोखी तिहारी झांकी।
जब लक्ष्मण मूर्छित पाये, तुम संजीवन बूटी लाये।

बाबा लीन्हीं पहाड़ उठाय, अनोखी तिहारी झांकी।
जब रावण मार गिरायों, तब राज्य विभीषण पायो।
सीता लाये साथ लिवाय, अनोखी तिहारी झांकी।
दूर-दूर से यात्री आवें, तेरे चरणों में शीश नवावें।
बाबा उनकी लज्जा राख, अनोखी तिहारी झांकी।
बाबा दुनियां करे पुकार, दुखिया खड़े हैं तेरे द्वार।
बाबा कर दे मेरा बेड़ा पार, अनोखी तिहारी झांकी।
दुःखियों के दुःख तू दे टार, हो रहा है मंगलचार।
जै जै श्री बालाजी महाराज, अनोखी तिहारी झांकी।
मैं दुखिया तेरे दर आया, आकर अपना कष्ट सुनाया।
कर दो मेरा बेड़ा पार, अनोखी तिहारी झांकी।

श्री गायत्री जी की आरती

आरती श्री गायत्री जी की॥ टेक॥
ज्ञान को दीप और श्रद्धा की बाती,
सो भक्ति ही पूर्ति करै जहं घी को॥ आरती० ॥
मानस की शुचि थाल के ऊपर,
देवि की जोति जगै जहं नीको॥ आरती०॥
शुद्ध मनोरथ के जहां घण्टा,
बाजै, करै पूरी आसहु ही की॥ आरती०॥
जाके समक्ष हमें तिहु लोक की,
गद्दी मिलै तबहूं लगे फीकी ॥ आरती०॥
आरति प्रेम सों नेम सो जो करि,
ध्यावहि मूरति ब्रह्म लली की ॥ आरती०॥
संकट आवें, न पास कबौ तिन्हें,
सम्पदा और सुख की बन लीकी॥ आरती०॥